अध्याय - छव

सिपाही सिंह श्रीमन्त

सिपाही सिंह श्रीमन्त के जन्म 8 मई 1923 ई० के बिहार के गोपालगंज जिला में गंडक का किछार पर एगो ठेठ भोजपुरिया गाँव मूंजा (बैकुंठपुर) में भइल रहे आ साँचहूँ इहाँ का एगो जुझारू सिपाही खानी भोजपुरी आंदोलन के आगे बढ़ावे में आपन जिनगी खपा दिहलीं। स्कूले में पढ़त रहीं त इहाँ का भारत छोड़ो आंदोलन में कूद के आपन देश भक्ति के परिचय देले रहीं। बाद में एम० ए०, एम० एड० तक शिक्षा ग्रहण कइलीं आ शिक्षा विभाग में कई गो पद पर पदाधिकारी के रूप में कार्य कइलीं। साहित्य सृजन के काम इहाँ का विद्यार्थी जीवन से ही करे के शुरू कइलीं। हिन्दी आ भोजपुरी दूनो भाषा में इहाँ का लिखत रहीं। 'उषा रानी' (1950) इनकर पहिल भोजपुरी कविता-संग्रह प्रकाशित भइल। ओकरा बाद 'आँधी' (1953) 'हीरा मोती' (1972), 'जवानी के जगाइले' (1973) कविता संग्रह आइल। उहाँ का गद्य विधा में कहानी, निबंध आदि पर आपन कलम चलइलीं। 'प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के' (1977) आ 'भोजपुरी निबंध निकुंज' (1977) का साथे अनेक हिंदी भोजपुरी पत्र-पत्रिका के संपादन से इहाँ का जुड़ल रहीं। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के साहित्य मंत्री, महामंत्री, भोजपुरी अकादमी के कार्य समिति-सदस्य, प्रगतिशील लेखक संघ के सक्रिय सदस्य का रूप में साहित्यिक आंदोलन में इनकर योगदान भुलाइल ना जा सकेला। 15 जनवरी, 1980 के इहाँ के निधन भ गइल ओकरा बाद उनकर शोध पूर्ण ग्रंथ 'थरूहट के लोकगीत' प्रकाशित भइल आ 'गीतांजली' के भोजपुरी अनुवाद अबहूँ प्रकाशन के बाट जोह रहल बा।

विषय प्रवेश

'आँधी' कविता में आँधी क्रान्ति के प्रतीक बिया। विषमता के खिलाफ बिगुल फूंकत कवि एह कविता में रूढ़िवादी विचारधारा, पूँजीवादी-सामंती व्यवस्था, सामाजिक कुव्यवस्था, शोषण-उत्पीड़न के विनाश के निमंत्रण देत परिवर्तन आ नवनिर्माण के आह्वान करत बिया।

आँधी

गूमसूम-गूमसूम तनिको ना भावे हमें
आँधी हई आँधी, अंधाधुंध हम मचाइले
नास लेके आइले, कि नया निरमान होखो
नया भीत उठेला, पुरान भीत ढाहिले।
ढाहिले पुरान, जीर्ण-शीर्ण के झकोरा मार
बुढ़िया सम्हारे तले ढाह ढिमिलाइले
नइकी पतइयन के दुनिया सँवारेला
पाकल पतइयन के भुँई भहराइले।
कोठा वो अमारी सातखंड में लुका के सूते
ओकरो करेजवा में कँपनी ढुकाइले
कोठा का जे चारू ओर हाहाकार उठे
ओमें कोठा के गिरावेवाला बल, ई बताइले।
सुविधा सहोट के जे बइठल कंगूरा पर
कलसा गुमानी लो के मुड़िया ठेंठाइले
हो-हो क-के, हू-हू क-के, दउर-दउर बार-बार
मार के निछोहे गर्वे चसकल छोड़ाइले।
बइठ क निचिन्त हरियरी का अलोता जे
रात-दिन खाली चोंटिए सँवारेले
अइसन पहाड़ लो के टीकवे उखाड़ ली-ले
मार के झकोरा उनुकर बबुरी बिगाड़िले।
बड़-ऊँच लमहर रोके के जे राह चाहे
ओह लो का हस्ती के माटी में मिलाइले
छोटे-छोटे, हलुक-हलुक, नन्हीं-नन्हीं मिले
ओके गोदी में उठा के, आसमान में खेलाइले।

केहू के उठाइले, गिराइले केहू के हम,
आँधी हई आँधी, अंधाधुंध हम मचाइले
घेर आसमान के अन्हार घोर घटा करे
फूँक-फाँक रूई लेखा ओको उड़िआइले।
बइठल-बइठल धरती के रस चूस
चूस जिएवाला लो के आँख पर चढ़ाइले
भारी-भारी मोट-मोट, ढेर-ढेर पत्तावाला
गाछ लो का फुनुगी के माटी में सटाइले।
छतिया उतान क-के, मन में गुमान क-के
नवे के ना चाहे, ओके दूर से विकाइले
किनहूँ के घेंट भा से मुँड़िए अँईठ दिले
किनहूँ के साफ जर-सोर से गिराइले।
दिन-रात लात से जे सभे दरमसे, ओहू
धुस-खरपात में भी जिनगी लगाइले
नीचा रहेवाला लो के नीचा से उठाइले
त बड़-बड़ ऊँच लो का मूड़ी पर चढ़ाइले।
रुख हमर देख-देख दूभ लेखा काम करे
सिरवा नवावे ओके कुछ ना बिगाड़िले
अईठल-अँकड़ल राह रोक खड़ा होखे
खाली हम ओही लो के चिन्ह के उजाड़िले।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. श्रीमंत जी के घर कवना जिला में रहे ?
2. 'आँधी' कविता के मूल स्वर का बा ?
3. कवि आपन उपमा केकरा से करत बा ?

(क) तूफान (ख) आँधी (ग) भूकम्प (घ) झकोर

4. कविता के एह पंक्ति के पूरा करीं -

'नया भीत उठेला ..... भीत ढाहिले।

5. पाकल पतई कहाँ भहरात रहे ?

(क) आकाश (ख) पाताल (ग) एने-ओने (घ) भूँइया

6. भारी-भारी मोट गाछ आ धुरा-खरपात कह के कवि केकरा ओर संकेत कर रहल बा ?
7. आँधी कविता में कवि काहे नाश ले के आवे के बात कहत बा ?
8. सही पर (✓) चिह्न लगाईं -

(क) नइकी पतइयन के दुनिया सँवारेला

(i) नया पता सजावेला

(ii) नया विचार लावेला

(iii) दुनिया के नइकी पतइयन से सजावेला

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कोठा-अटारी में लुका के सूते वाला के कवि का करेला ?
2. कवि केकरा के फूँक के उड़ावेला आ काहे ?
3. जनता के शोषक के उपमा कविता में केकरा से दिआइल बा ?
4. 'आँधी' कविता में आँधी केकर प्रतीक बा ?

ABSOL SOLUTIONS PATNA

दीर्घ उत्तरीय सवाल

1. 'आँधी' कविता के भाव लिखीं ?
2. आँधी कविता के प्रगतिवादी कविता कहल जाई किना, एह पर आपन विचार लिखीं ?
3. कवि समाज के शोषक लोग के कइसे सबक सिखावे के कहत बा ?
4. आँधी कविता के सारांश लिखीं ?

भाषा अध्ययन

1. गूमसूम-गूमसूम, हलुक-हलुक जइसन शब्दन के एह कविता में से चुन के लिखीं।
2. एह कविता में प्रयोग भइल नीचे लिखल मुहावरा के वाक्य में प्रयोग करीं –

(क) आँख पर चढ़ाइल

(ख) माटी में मिलावल

(ग) माटी में सटावल

परियोजना कार्य

1. आँधी जइसन क्रान्ति से संबंधित भोजपुरी के कवनो एगो कविता के उदाहरण दीं।
2. समाज में फइलल अराजकता के दूर करे खातिर रउआ का करब लिखीं।

शब्द भंडार

जीर्ण-शीर्ण	–	टूटल-फूटल
अमारी	–	अटारी
सहेट के	–	इकट्ठा क के
कंगूरा	–	चोटी, किला आ मंदिर के ऊपरी भाग
चसकल	–	लत लागल
टीकवे	–	सिर के बीचे राखल बाल के गुच्छ
छतिया उतान क के	–	घमंड से
दरमसे	–	रौंदे, रउंदे
निछोहे	–	निठुराई से